

#1: क्या मेरे जीवन में परमेश्वर है?

इस 7-भाग श्रृंखला के आपके पहले संदेश में आपका स्वागत है।

बधाई हो, क्योंकि आपने परमेश्वर के साथ एक रिश्ते की शुरुआत की है। जब आप अपने जीवन में यीशु को आमंत्रित किया, आपने सबसे मूल्यवान रिश्ते को आरंभ किया — जो एक व्यक्ति को अपने जीवन में मिल सकता है।

जिस रात मैंने यीशु को अपने जीवन में स्वीकार किया, मैं जानता था कि यह एक बड़ा फैसला था। मैं वर्षों से एक नास्तिक था। बहुत जोर से हवा में बोलना, और परमेश्वर से बात करना मेरे लिए चिरस्मरणीय था।

उतना ही नहीं, मुझे बोध हुआ कि मैं बिल्कुल सही कर रहा हूँ।

मेरा प्रार्थना संक्षिप्त था। “ठीक है, आप जीत गए। मैंने आपको मैं अपने जीवन में आमंत्रित किया। आप जो चाहे मेरे जीवन में कर सकते हैं”।

मेरे मन में, मैं बस परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर रहा था। परमेश्वर होने के नाते, यह मुझे सही लगा कि उसे मेरे जीवन को प्रभावित करने का अधिकार है।

पहली बात जो मैंने परमेश्वर के बारे में समझा है: परमेश्वर अदृश्य है। (मैं आश्चर्यचकित हुआ, आप?) लेकिन वास्तव में, यह एक मुद्दा था।

मेरा मतलब है, जब आपने यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया, तो कैसे हम निश्चित हो सकते हैं कि वह यहाँ है? तुम उसे नहीं देख सकते। तुम्हें कैसे पता है कि वह वास्तव में तुम्हारे जीवन में प्रवेश किया?

क्या यह अपनी अपनी आस्था की बात है? या फिर आपने अपने दुआ में जो कुछ कहा? या फिर आप कैसे लग रहा है?

नहीं, इन में से कुछ भी नहीं।

तुम्हें पता है, तुम्हारा अब परमेश्वर के साथ एक रिश्ता है। क्योंकि उसने पेशकश की और आपने बस अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

यह लेख आपको स्पष्ट समझाएगा कि कैसे आप अपने जीवन में निश्चित हो सकते हैं कि यीशु आपके जीवन में है — और क्या मतलब है इसका!

क्या मेरे जीवन में परमेश्वर है? (<https://www.eknayajeevan.com/a/amichristian.html>)

जब आप उस निर्णय को लिया और यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया, तो यह जानना महत्वपूर्ण है, कि क्या परमेश्वर तुम्हारी सुनी है? हाँ। यीशु ने वादा किया है कि वह हमारे जीवन में प्रवेश करेगा यदि हम उसे आमंत्रित करें।

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>
<https://eknayajeevan.com>

#2: परमेश्वर मेरे जीवन में क्या किया?

परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते कि एक अहम पहलू।

इस रिश्ते में आप अकेले नहीं हैं।

यह केवल एक तरफा संवाद नहीं है। ऐसा नहीं है कि आप बस उनकी आराधना करते हैं, बल्कि वह भी आप में बहुत रूचि रखता है।

परमेश्वर हमसे आके मिला।

मुझे याद है, शुरुआती दिनों में — जब मैंने प्रभु यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया तब मेरे मन में बहुत से सवाल थे।

- वह कैसे दिखता है? क्या उसे मेरा ख्याल है?
- परमेश्वर मेरे जीवन के बारे में क्या सोचते हैं?
- वह मुझे किस प्रकार से देखता है?

यह बहुत ही रोचक तथ्य है। बाइबिल में इस प्रकार के सारे सवालों के जवाब मिलते हैं और बहुत सी जानकारीयां भी।

अब चूंकि आप परमेश्वर के साथ रिश्ते में हैं, आप पाएंगे कि जब आप बाइबिल पढ़ते हैं तब परमेश्वर आपसे व्यक्तिगत रीति से बातचीत कर रहा है। वह अपने आप को प्रकट करेगा। वह आपके हृदय से बात करेगा।

मुझसे यह न पूछें कि वह कैसे बात करता है। लेकिन वह बहुत ही स्पष्ट तरीके से बातचीत करता है।

क्या आपके पास बाइबिल है? अगर नहीं, तो आप पास के मसीही पुस्तकालय से प्राप्त कर सकते हैं या फिर अमेज़न.कॉम पर भी उपलब्ध है।

आप बाइबिल को इंटरनेट में ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं:

<https://www.biblegateway.com>, <https://www.bible.com/hi/>

अब हम देखेंगे कि बाइबिल कैसे पढ़ना है। यह कोई मुश्किल बात नहीं है।

<https://www.eknayajeevan.com/a/lesson1.html>

मान लीजिए की आपने बाइबिल में से यह वाक्य पढ़ा — "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपने एकलौते पुत्र को दे दिया...."

अब मैं आप से पूछता हूँ कि — इस संसार के लोगो के प्रति परमेश्वर की क्या भावना है? आप को बहुत दूर तक सोचने की आवश्यकता नहीं है बस विचार करें कि परमेश्वर कि क्या सोच होगी मनुष्यो के प्रति?

अभी आपने बाइबिल से जो आयत पढ़ा उसमे ध्यान दे — "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया इसमें हमें परमेश्वर की सोच दिखाई पड़ती है — वह हमसे प्रेम करता है।

आशा करता हूँ आपको समझ आ रहा है।

आइए हम विस्तार से बाइबिल मनन करे, आप ज़रूर आनन्दित होंगे। तब हम जानेंगे की परमेश्वर हमारे साथ किस प्रकार रिश्ता निभाता है।

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>
<https://eknayajeevan.com>

#3: परमेश्वर का प्रेम

परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए सबसे सटीक शब्द है "अदभुत"। परमेश्वर का प्रेम, मनुष्यो से मिलने वाले प्रेम से बहुत ही अलग है।

मेरे विचार सही है कि नहीं इस बात के लिए मैंने "अदभुत" शब्द के परिभाषा को देखा।

और वह इस प्रकार से है: साधारण से अलग हटके और उम्मीद से बहुत ही बढ़कर।

यह बिलकुल सही है। चौंकिए मत परमेश्वर का प्रेम कुछ इस प्रकार से है।: <https://www.eknayajeevan.com/a/unique.html>

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>
<https://eknayajeevan.com>

#4: परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता सुरक्षित है।

ज़िन्दगी में एक नयी रिश्ते की शुभारंभ करना जोखिम भरा हो सकता है क्योंकि हम नहीं जानते यह रिश्ता कब तक कायम रहेगा। हो सकता है दूसरे व्यक्ति की मौत हो जाये, या फिर वह सम्बन्ध तोड़ दे, या फिर वह इस रिश्ते से ऊब जाये।

परन्तु जब परमेश्वर के साथ रिश्ते की बात आती है, तो यह पूर्ण रीति से सुरक्षित है। परमेश्वर हमें छोड़ के कही नहीं जायेगा। अगर हम उसके प्रति अविश्वासयोग्य है तौभी वह विश्वासयोग्य रहेगा। ऐसा इसलिए नहीं है कि परमेश्वर हमारे आधीन है। वह डरपोक किस्म का नहीं है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने हमें गोद लिया है, हमें अपना संतान बना लिया है। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और वह इस रिश्ते को अनंतकाल के लिए निभाना चाहता है।

यह लेख परमेश्वर के साथ के अनंतकाल के रिश्ते का वर्णन करता है।: <https://www.eknayajeevan.com/a/willthislast.html>

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>
<https://eknayajeevan.com>

#5: हमारे संगी मसीही विश्वासियों का महत्व

क्या आपने कभी मैराथन दौड़ने वाले दूसरे व्यक्ति के साथ समय बिताया है। (मान लीजिए आप भी एक धावक है)। क्या आप ऐसे धावक से मिले है जिसे मैराथन दौड़ की शिक्षा नहीं मिली हो?

ऐसा होता नहीं है क्यों?

उन्हें भी उत्साह वर्धन की आवश्यकता है। जवाबदेही। उन्हें भी ऐसे लोगो की ज़रूरत है जो उनका सुबह 5:30 बजे मैदान में इंतज़ार कर रहे हो। उन्हें भी संगी धावक की ज़रूरत है जिसके साथ वो दौड़ सके, जो उन्हें तेजी से दौड़ने के लिए ललकारे।

आप समझे? हमें भी उन लोगो की ज़रूरत है जो यीशु को जानते हो। जो चाहते है परमेश्वर उनके जीवन में तबदीली लाये।

आप सोच रहे होंगे की मै आपको कोई फलाना ग्रुप में शामिल होने की सलाह दूंगा — नहीं ऐसा नहीं है। मै यह कहना चाह रहा हूँ कि अच्छा होगा हम ऐसे लोगो से घुले मिले जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते हो और उसका अनुकरण करते हो।

जब मै विश्वास में आया, मै परमेश्वर के ज्ञान में अलग अलग तरीके से सीख पाया मै उसे आप लोगो को भी क्रमानुसार बताना चाहूंगा (मेरे जीवन में वो सही साबित हुआ, जो भी हो।)...

1. परमेश्वर के साथ समय बिताना, बाइबिल पढ़ना, परमेश्वर से बात करना

मै हमेशा परमेश्वर से सवाल को पूछता था "कृपया मुझे समझाए..."; "मै कैसे आप पर इस बात के लिए भरोसा करू..."; "यह क्या है..." ; मै बाइबिल से वचनो को अपने कॉपी में लिख लिया करता था ; कभी कबार तो प्रार्थनाय भी। और मैं यह सब बीच बीच में समय निकाल के करता था। इसलिए मैने समय निर्धारित किया, बस हफ्ते में दो तीन बार एक एक घंटे के लिए या उससे ज़्यादा भी। बाकी दिनों में, मै उन सारी बातो को जो मैने लिख के रखा हुआ है उसे फिर से पढ़ता था क्योंकि यह काम जल्दी से हो जाता था।

2. दूसरे विश्वासियों के साथ समय बिताना जो बाद में बहुत अच्छे मित्र बन गए

मैंने उनके जीवन को देखकर बहुत कुछ सीखा, अपने विचारों को आपस में व्यक्त करके, परमेश्वर जो हमें सिखाता था, एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करके, आपस में संगति को महसूस करते हुए. मैंने परमेश्वर के प्रेम को उनके द्वारा भी देखा और परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीख पाया।

3. किसी के घर में या कॉफी शॉप या कहीं भी 4-12 लोग जमा होके बाइबिल मनन करना (अगर आप चाहे तो आप भी इस प्रकार की एक झुण्ड बना सकते है।

4. कांफ्रेंस, चर्च मीटिंग्स, किताबें

तो आप कैसे दूसरे विश्वासी को खोज सकते है?

शायद आपका कोई मित्र भी अपने जीवन में प्रभु यीशु मसीह को आमंत्रित किया होगा। लेकिन आप कैसे जानेंगे? वैसे, आप उनसे पूछ सकते हो।

आप अपने चारों तरफ पता कर सकते हो कि कोई चर्च या बाइबिल स्टडी मीटिंग होती है क्या? बहुत से अच्छे ग्रुप हैं। (ईमानदारी से बताऊँ तो गलत शिक्षा देने वाले ग्रुप भी हैं। आप परमेश्वर से अगुवाई मांगें। अगर कोई ग्रुप आपके लिए सही नहीं है तो परमेश्वर आपको सावधान करा देगा।

अगर आप कोई चर्च या ग्रुप की जानकारी चाहते हैं तो हम से भी संपर्क कर सकते हो। हमें बड़ी खुशी होगी आपकी मदद करने और आपको सही जगह ले जाने।

हमें ईमेल करें: hindiwebmaster@sasiaccc.org

अब... परमेश्वर पर भरोसा करने का क्या अर्थ है? हम यह कैसे कर सकते हैं? यह बहुत ही गम्भीर विषय है। जब आप परमेश्वर पर भरोसा करेंगे, तब आप अपने जीवन में परमेश्वर के द्वारा कार्यों को देखेंगे।

हो सकता है आपको शाबाशी मिले।

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>
<https://eknayajeevan.com>

#6: परमेश्वर पर भरोसा करने का क्या अर्थ है?

आपने ध्यान दिया होगा, हम सब के साथ एक जैसे बातचीत नहीं करते। आप जिस प्रकार से अपने बॉस से व्यवहार करते हैं शायद अपने स्टोर क्लर्क से वैसे नहीं। जो खास बातें आप अपने मित्र से करते हैं शायद अपनी माँ से नहीं।

हो सकता है आपको शाबाशी मिले।

अब जब आप परमेश्वर के साथ एक रिश्ते में हैं, आपको क्या लगता है की वह हमसे क्या चाहता होगा?

इस प्रश्न का उत्तर आपको चौंका सकता है। ऐसा नहीं है की — अच्छा बनना है, गलत काम नहीं करना है या फिर परमेश्वर की बहुत ज़्यादा कठिन सेवा करनी है या फिर पाप नहीं करना है।

पूरे बाइबिल में परमेश्वर ने इस बात को स्पष्ट किया है की वह हम से क्या चाहता है: उस पर बस भरोसा करे।

बहुत ही अदभुत बात है ना? परन्तु यही सत्य है।

परमेश्वर चाहता है की हम संपूर्ण मन से उस पर आश्रित हो, अपने आप को उसके हाथों में सौंप दे।

नीतिवचन 3:5 में लिखा है, "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना"।

अगर हम परमेश्वर पर भरोसा करते है तो सही मायने में इसका क्या अर्थ है?

यह लेख हमें विस्तार से बताता है की विश्वास क्या है और क्या नहीं है। :

<https://www.eknayajeevan.com/a/naturefaith.html>

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>

<https://eknayajeevan.com>

#7: अगर मुझसे पाप हो जाये तो?

भले ही मसीह हमारे जीवन में है तभी भी यह बात हमें मानना होगा कि हम एक मनुष्य है।

इसका अर्थ यह है की कभी कबार हम अपनी मर्जी में काम करेंगे ना की परमेश्वर की इच्छा अनुसार। और यह बात मेरे बारे में और बाकी जीवित विश्वासियों के बारे में सही ही है।

भले ही हम परमेश्वर को खुश करना चाहते है, उस पर भरोसा करना चाहते है, मसीही जीवन को अच्छे से जीना चाहते है; तौभी सम्भावनाएं है की हम पाप करे।

यह लेख हमें स्पष्ट करेगा की पाप क्या है? और हम यह देखनेगे की पाप परमेश्वर के साथ के हमारा रिश्ते में कैसे प्रभाव डालता है और कैसे नहीं।

और इससे भी बढ़कर यह कि हम कैसे परमेश्वर से माफ़ी मिल सकती है।

<https://www.eknayajeevan.com/a/fall.html>

मेरीलिन एडमसन

<https://everystudent.in>

<https://eknayajeevan.com>